पढ़ना कैसे सिखाया जाय?

छोटे बच्चों के अध्यापक को जो तमाम चुनौतियां झेलनी पड़ती हैं, पढ़ना सिखाना शायद उनमें सबसे बड़ी और कठिन चुनौती है। वह सबसे कठिन इसलिए है क्योंकि पढ़ना एक सादा कौशल नहीं है। उसमें कई कौशल और बोध–क्षमताएं शामिल हैं। पढ़ना सिखाने की कोई एक अचूक विधि नहीं है। हर विधि की अपनी सीमाएं हैं और अध्यापक को यह कोई नहीं सुझा सकता कि उसकी परिस्थिति में सही उपाय क्या है। फिर भी, पढ़ने का शिक्षण एक स्फूर्तिवान काम है क्योंकि बच्चे के जीवन का बहुत कुछ उस पर निर्भर है। यदि एक बार आप बच्चे को पढ़ने और पुस्तकों से सफलतापूर्वक जोड़ सकें तो फिर उसके लिए संभावित उपलब्धियों का कोई अंत नहीं है।

तो असली बात यह है कि पढ़ने का शिक्षण 'सफलतापूर्वक' कैसे किया जाए? यहां हमें दो क्षण रुक कर अपने इर्द–गिर्द फैली भीषण विफलता पर विचार करना चाहिए। लाखों बच्चे हर साल पढ़ना सीखते हैं, लेकिन, इनमें से बहुतेरे पढ़ने का टिकाऊ कौशल प्राप्त नहीं कर पाते। बहुत से स्कूल की परीक्षा पास कर लेते हैं, लेकिन पढ़ने में रुचि का विकास नहीं कर पाते। कई बच्चे आराम–से पढ़ते दिखते हैं, पर वास्तव में पढ़े हुए को ज्यादा समझ नहीं पाते। काफी हद तक विफलताओं का दोष हम पढ़ने के कमज़ोर शिक्षण को दे सकते हैं।

पढ़ने का स्वस्थ कौशल बच्चे के समग्र विकास में क्या भूमिका निभाता है, यह किसी अध्यापक को याद दिलाने की जरूरत नहीं। लेकिन ऐसा लगता है कि बहुत कम अध्यापक यह जानते हैं कि 'पढ़ने का स्वस्थ कौशल' किसे कहेंगे और उसका विकास कैसे किया जा सकता है? इस अध्याय में पढ़ने का स्वस्थ कौशल हम उन कौशलों के समूह को मानेंगे जो लिखी या छपी भाषा को अर्थ से जोड़ने में बच्चे की मदद करते हैं। जब तक एक बच्चा पढ़ी हुई सामग्री को समझने या पहले से ज्ञात किसी चीज से जोड़ने में असमर्थ रहता है तब तक हम उसकी पढ़ने की क्षमता को स्वस्थ नहीं कह सकते। **इस पुस्तक के संदर्भ में, पढ़ने की परिभाषा हम 'लिखे हुए शब्दों में अर्थ ढूँढ़ने की प्रक्रिया' के रूप में कहेंगे।**

स्थिति फिलहाल यह है

यदि हम यह परिभाषा मंजूर कर लें तो जल्दी ही यह देख सकेंगे कि आंगनवाड़ियों (या किंडरगार्टनों) और प्राइमरी स्कूलों में हो रही अनेक चीजें उचित नहीं हैं। उदाहरण के लिए वर्णमाला को रटना या कहानी को शब्दशः जोर से दुहराना, हमारी परिभाषा के हिसाब से सही गतिविधियां नहीं हैं। ऐसा करते समय बच्चे लिखित भाषा को किसी अर्थ से नहीं जोड़ पाते। वर्णमाला के अक्षरों का अलग से कोई अर्थ नहीं होता। कई स्कूलों में अक्षरों को 'कमल' और 'खरगोश' जैसे रूढ़ शब्दों से इस तरह बांध दिया जाता है कि फिर बच्चे इन अक्षरों को किसी भी शब्द में पाकर 'कमल' का 'क' कहकर पहचान पाते हैं। यदि कहानी हरेक शब्द को तोड़कर पढ़ी जाए तो उसका कोई खास अर्थ नहीं निकलेगा– इस तरह कहानी से संबंध बनाना भी संभव नहीं है। कुछ लोग यह दलील दे सकते हैं कि ये गतिविधियां भले तत्काल सार्थक न हों पर आगे चलकर अर्थग्रहण के साथ पढ़ने की बुनियाद बन सकती है। शायद इस दलील में थोड़ी–बहुत सच्चाई हो, पर यह सच्चाई तभी लागू हो सकती है जब सारे बच्चे स्कूल में इतने वर्ष टिकें कि वे सार्थक रूप से पढ़ना सीख लेने का अवसर पा सकें। उन बच्चों के बारे में भी सोचना ज़रूरी है जो एक ध्वनि को दर्जनों बार दुहराने, अक्षर की नकल उतारने, शब्दों को अलग करके जोर जोर से बोलने की कवायद से बुरी तरह निराश और कुंठित हो जाते हैं। हम सब जानते हैं कि बच्चों को ऐसी गतिविधियां भाती हैं, जिनका फल तुरंत मिलता हो। बहुत आगे चलकर लाभ मिलने की उम्मीद थोड़े ही बच्चों को प्रेरित कर सकती है। और कई बच्चों के लिए तो भविष्य स्कूल में रहने की भी गारंटी नहीं देता। तमाम अन्य कारणों के साथ साथ शुरू से मिली विफलता और निराशा स्कूल से इन बच्चों को विदा कर देती है।

अतः हमें इन बुनियादी सवाल का सामना करना ही पड़ेगा कि पढ़ने की आरंभिक शिक्षा को सार्थक कैसे बनाएं? आगे के पृष्ठों में अध्यापकों के करने लायक कुछ चीजें सुझाई गई हैं। जो लोग पुरानी विधियों के आदी हैं, उन्हें ये चीजें एकदम चकरा देने वाली या असंभव लग सकती हैं। पर यदि पुरानी विधियाँ ठीक–ठाक होतीं तो हमें नई विधियों की जरूरत ही न पड़ती। हमें न केवल नई विधियों की बल्कि संपूर्णतया नए परिप्रेक्ष्य की जरूरत इसलिए है क्योंकि पुरानी विधियां ठीक से काम नहीं दे रही हैं।

शुरुआत किताबों से

'लैश कार्ड', चार्ट या लकड़ी के अक्षरों जैसी प्रचलित सामग्री की तुलना में पढ़ने की शुरुआत किताबों से करना कहीं अच्छा और जरूरी है। हमारा उद्देश्य तो आखिर यही है न कि बच्चे आगे चलकर किताबें पढ़ सकें! चार्टों और कार्डों जैसी चीजें कभी–कभी काम आ सकती हैं पर वे पढ़ना सीखने की वैसी तेज और स्थायी इच्छा पैदा नहीं कर सकतीं जैसी किताबें कर सकती हैं। न की उन्हें पढ़कर बच्चे को अपनी उपलब्धि का वैसा आभास मिल सकता है जैसा कोई किताब दे सकती है। लेकिन पहले हमें यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि हम किस तरह की किताबों की चर्चा कर रहे हैं और उन्हें किस तरह इस्तेमाल करना है?

पढ़ना सिखाने के लिए उपयोगी पुस्तकें वही हैं जिनकी चर्चा पिछले अध्याय में 'बात' के अंतर्गत हो चुकी है। किताबें आप खुद भी बना सकते हैं। साफ अक्षरों में हाथ से लिखी और रेखाचित्रों या तस्वीरों (जिन्हें बच्चे बना सकते हैं) से सजाई गई कोई भी कहानी आपके संग्रह में स्थायी रूप से शामिल हो सकती है। इसी तरह आप कविताओं, गीतों और बच्चों के अपने खेलगीतों के संग्रह बना सकते हैं।

किताब पढ़कर सुनाना

इस बात का हमेशा ध्यान रखिए कि बच्चे दस से ज्यादा न हों और फर्श पर आपके गिर्द बैठे हों। बाकी बच्चों को इस वक्त कोई अन्य काम देना जरूरी है। आपके गिर्द बैठे बच्चों में से हरेक को किताब के पन्ने आसानी से नज़र आने चाहिए। किताब में जो लिखा है उसे पढ़ते वक्त आप उसमें अपना पुट अवश्य देते जाइए। कुछ किताबों में कहानी या कोई सामग्री खूब विस्तार से प्रस्तुत की गई होती है। एक लंबी कहानी को ज्यों का त्यों पढ़ देने से काम नहीं चलेगा। कहानी आपको इतनी अच्छी तरह आनी चाहिए कि आप उसे छोटा करके अपने शब्दों में सुना सकें। इसके विपरीत यदि हर पृष्ठ पर एक या दो पंक्तियां ही लिखी हैं तो आप कुछ विवरण जोड़ सकते हैं। यह भी आवश्यक है कि आप चित्र में दिए गए विवरण बच्चों को दिखाइए और उन पर इत्मीनान से बात कीजिए।

'पढ़ना' क्या है?

जो लोग पढ़ नहीं सकते उनके लिए पढ़ना एक पहेली है। तीस साल पहले विशेषज्ञों को भी यह नहीं मालूम था कि जब बच्चा पढ़ना सीखता है तो वह दरअसल करता क्या है? अपने अनुभव और परंपरा के आधार पर अध्यापकों ने कुछ 'विधियां' खोज रखी थीं, जैसे 'वर्णमाला' विधि, 'उच्चारण' विधि, 'शब्द' विधि आदि। इनमें से कोई 'विधि' पढ़ने की प्रक्रिया की जानकारी पर आधारित नहीं थी। ये 'विधियां' आज तक लोकप्रिय बनी हुई हैं।

अब यह माना जाता है कि पढ़ने की प्रक्रिया में अंकित सूचना की बानगी ग्रहण करना महत्वपूर्ण है। हमारी आंखे जब अक्षरों, विराम चिह्नों, शब्दों और शब्दों के बीच छोड़ी गई जगहों का मुआयना करती हैं तो हमारा मस्तिष्क इस ग्राफिक (हाथ से लिखी गई या छपी हुई)सामग्री की संपूर्ण मात्रा पर नहीं देता यदि ऐसा होता तो छोटी छोटी सूचना पर गौर करने की मस्तिष्क की क्षमता पर अत्यधिक बोझ पड़ता और अधिकांश लोग जिस रतार से पढ़ते हैं वह असंभव हो जाती। पारंपरिक विधियों से पढ़ना सीखने वाले कई बच्चों के साथ यही होता है। वे हर शब्द को अक्षरों की छोटी इकाइयों में तोड़ते हैं और इस तरह शब्दों का अर्थ ग्रहण करने की मस्तिष्क की क्षमता पर बहुत ज्यादा बोझ डाल देते हैं। एक प्रवीण पाठक की आंखें ऐसा बोझ नहीं पड़ने देतीं क्योंकि वे पन्ने पर अंकित ग्राफिक सूचनाओं के एक सीमित, चुने हुए अंश से जूझती हैं। प्रवीण पाठक किसी अक्षर के पूरे आकार पर ध्यान नहीं देता है, न ही वह एक शब्द के सारे अक्षरों या एक वाक्य के सारे शब्दों पर ध्यान देता है। **पढ़ते समय उसकी आंखें अंकित सामग्री के एक छोटे–से अंश पर गौर करती हैं। शेष भाग वह समझदार**

अनुमान के जरिए ग्रहण करता हैं। अनुमान का आधार होता है अक्षरों की आ.तियां, शब्द, उनके अर्थ उनके संयोजन और आम दुनिया से पाठक का पहले से मौजूद परिचय।

पढ़ना एक एकाकी प्रक्रिया नहीं है, उसमें कई प्रक्रियाएं शामिल हैं। पढ़ते वक्त भाषा के उपयोग से जुड़े तीन तरह के संकेत हमारे ध्यान में आते हैं।

1. अक्षरों की आकृतियां और उनसे जुड़ी ध्वनियां;
2. वाक्य विन्यास (जैसे विशेषण का संज्ञा से पहले आना);
3. शब्दों के अर्थ।

भाषा का इस्तेमाल करते करते हम इन तीनों तरह के संकेतों से जुड़ी कुछ अपेक्षाओं के आदी हो जाते हैं। ये अपेक्षाएं ही अनुमान या भविष्यवाणी के आधार पर छपी हुई सामग्री का वह अंश पूरा करने में हमारी मदद करती हैं जिसे हमारी तेज रतार आंखों ने छोड़ दिया था।

इस तरह किताब पढ़ते वक्त प्रश्न पूछना या किसी दूसरी तरह से परीक्षा लेना ठीक नहीं है। कहानी पूरी हुई तो हुई, अब कोई और गतिविधि शुरू कीजिए। बच्चे स्वयं कुछ कहना या पूछना चाहें तो दूसरी बात है, लेकिन एक अध्यापक के तौर पर आप किताब पढ़कर सुनाने के अवसरों को प्रश्नों से दूर रखें।

यदि हर बच्चे को हर हते तीन बार इस तरह किताब सुनने को मिले तो आप पाएंगे कि बच्चे जल्दी ही आपकी पढ़ी किताबों पर बात करना शुरू कर देंगे। कुछ ही समय में वे चित्रों और कहानी से इतने परिचित हो जाएंगे कि वे आपके पढ़ने का अनुमान लगा सकेंगे। इसी अनुमान के सहारे वे एक दिन किताब को स्वयं पढ़ सकेंगें तब तक उन्हें किताब की सारी बातें ज्ञात हो चुकी होगी और वे इस चीजों से तरह तरह के संबंध बना चुके होंगे। जब वे किताब को पढ़ेगे– एक पृष्ठ पर दिए गए सारे शब्द या शब्दों के सारे अक्षर जाने बगैर–तो वे उससे अर्थ के कई स्तरों पर जुड़ सकेंगे।

कविता सुनाना और गाना

यदि आपने पिछले पृष्ठ पर दिया गया छोटा सा लेख 'पढ़ना क्या है?' पढ़ा है तो आपने यह समझ लिया होगा कि पढ़ने की कुंजी अनुमान लगाने का कौशल है। इस कौशल के विकास में कविता आश्चर्यजनक योगदान कर सकती है। नियमित रूप से कविताएं सुनकर छोटे बच्चे भाषा की बुनियादी संरचनाएं ग्रहण कर लेते हैं। कविता इसके लिए विशेष रूप से उपयोगी इसलिए है क्योंकि उसे याद रखना आसान होता है। कविता याद रखने के लिए छोटे बच्चों को कोई विशेष प्रयास नहीं करना पड़ता। बार बार सुनने, मजा लेने और दुहराने से कविता अपने आप याद हो जाती है।

अध्यापक के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि अच्छी कविताओं का चुनाव कैसे करें और उन्हें कहां तलाश करें। अधिकांश पाठ्यपुस्तकों में दी गई कविताएं प्रायः बहुत घटिया स्तर की होती हैं और भाषा के विकास की दृष्टि से उनकी उपयोगिता बहुत कम होती हैं। इसी तरह हिंदी की मासिक पत्रिकाओं में छपने वाली अधिकांश कविताएं नि.ष्ट होती है। **पाठ्यपुस्तकों और पत्रिकाओं की ज्यादातर कविताएं उबाऊ और एक सतही अर्थ में आदर्शवादी होती हैं। उनकी वाक्य रचना और शब्दावली .त्रिम होती है। उनमें रोजमर्रा की भाषा का पुट नहीं होता। यही कारण है कि वे भाषा सीखने के साधन के रूप में विशेष उपयोगी नहीं होतीं।**

बच्चों में पढ़ने के कौशल की नींव डालने के लिए एकदम अलग किस्म की कविताएं चाहिए। ऐसी कुछ कविताएं अगले पृष्ठों पर दी गई हैं। निश्चय ही अध्यापक स्वयं ऐसी अन्य कविताएं तलाश सकते हैं पर इसके लिए उन्हें काफी मेहनत करनी होगी। भाषा के स्वाभाविक और खेल जैसे प्रयोग के लिए अपनी दृष्टि दौड़ानी होगी। महज नैतिक सीख देने वाली कविताओं से दूर रहना होगा।

एक काम कोई भी अध्यापक आसानी से कर सकता है– यह है बच्चों के उन गीतों को लिखकर रखना जिन्हें वे कूदते, फांदते, रस्सी कूदते और गेंद से खेलते समय गाते हैं ये खेलगीत पारंपरिक हैं और इन्हें शहर में ढूंढ़ना कुछ कठिन होगा, पर थोड़ा प्रयास करके हम ऐसे गीतों का संग्रह तैयार कर सकते हैं। संग्रह एक या कई छोटी किताबों की शक्ल ले सकता है जिनमें हर पृष्ठ पर एक गीत सुंदर अक्षरों में लिखा हो और साथ में हाथ से बनाई या पत्रिका से काटी गई कोई तस्वीर हो।

यह जरूरी नहीं कि तस्वीर गीत में कही गई बात को हू–ब–हू पेश करती हो। इतना काफी है कि तस्वीर में गीत का भाव या उससे किसी प्रकार जुड़ा दृश्य प्रकट होता हो। आप इस तरह की कई पुस्तकें तैयार कर सकते हैं। लगभग 16 पेज की ये पुस्तकें सादे कागज से बन सकती हैं। यदि आप खर्चा उठा सकें तो ड्रॉइंग के कागज से बनी किताब ज्यादा चलेगी और आपको हर साल वही किताब फिर से नहीं बनानी पड़ेगी।

कविता की किताब पढ़ने का ढ़ंग वही है जो अन्य किताबे पढ़ने का है– यानी बच्चों को अपने चारों ओर बैठाएं और किताब को बीच में रखें। दो–तीन बार पढ़ने के बाद आप किताब के बगैर कविता गाकर सुनाएं और बच्चे आपके साथ गाएं। यदि कविता अच्छे स्तर की हुई तो वे जल्दी ही उसे याद करके गा सकेंगे। बाद में जब वे उसे किताब से पढ़ेंगे तो शब्दों का आसानी से अनुमान लगा सकेंगे। छह वर्ष के बच्चे एक पूरी कविता कागज या स्लेट पर मजे से उतार सकते हैं, ओर अगर तब तक वह उन्हें याद हो चुकी हो तो कुछ ही दिनों में कविता के शब्द पहचानने में कोई खास कठिनाई नहीं होगी।

1. ईलम डील खेलो
आओ खेलो ईलम डील।
गेंद जो उछाली ले के
भाग गई चील।
रस्ते में पड़ी एक
बहुत बड़ी झील।

जिसके बीचों बीच में थी
ऊंची सी कील।
चील ज्यों ही बैठी उस पर
टूट गई कील।
औंधे मुंह पानी में
जाके गिरी चील।
गेंद रही तैरती और
डूब गई चील।

ईलम डील खेलो आओ
खेलो ईलम डील।

–निरंकार देव सेवक

2. बहुत जुकाम हुआ नन्दू को
एक रोज वह इतना छींका
इतना छींका इतना छींका
इतना छींका इतना छींका
सब पत्ते गिर गए पेड़ के
धोखा हुआ उन्हें आंधी का

– राम नरेश त्रिपाठी

3. नारंगी रंग की नारंगी
बेच रहा फलवाला गाकर
और बजाता है सारंगी

चमक रहा है छिलका पीला

सुंदर फल है बड़ा रसीला
प्यास बुझे मन खुश हो जाता
ढीली तबियत होती चंगी

– सुधा चौहान

4. कितनी लंबी है सड़क
कितना ऊंचा है पहाड़
कितनी छोटी है चिड़िया
पेड़ है कितना बड़ा

तेज कितनी है नदी
पत्थर कितना गोल है
घास है कितनी हरी
फूल कितना लाल है

–कृष्ण कुमार

5. लड़कों इस झाड़ी के भीतर
छिपा हुआ है जोड़ा तीतर
फिरते थे यह अभी यहीं पर
चारा चुगते हुए जमीं पर
एक तीतरी है इक तीतर
हमें देख कर भागे भीतर
आओ इनको जरा डरा कर
ढेला मार निकालें बाहर

यह देखो वह दोनों भागे
खड़े रहो चुप बढ़ो न आगे

अब सुन लो इनकी गिटकारी
एक अनोखे ढंग की प्यारी
तीइत्तड़ तीइत्तड़ तीइत्तड़ तीइत्तड
नाम इसी से इनका तीतर

–श्रीधर पाठक

6. लाल टमाटर लाल टमाटर, मैं तो तुमको खाऊंगा।
अभी न खाओ मैं कुछ दिन में और अधिक पक जाऊंगा

लाल टमाटर लाल टमाटर, मुझको भूख लगी
भूख लगी है तो तुम खा लो यह गाजर मूली सारी।।
लाल टमाटर लाल टमाटर, मुझको तो तुम भाते हो।
तुमको जो अच्छा लगता है उसको तुम क्यों खाते हो।।

लाल टमाटर लाल टमाटर, अच्छा तुम्हें न खाऊंगा।
मगर तोड़ कर डाली पर से अपने घर ले जाऊंगा।।

–निरंकार देव सेवक

7. एक, दो तीन चार।

आओ चलें कुतुब मीनार।
पांच, छः, सात, आठ
देखें चल के राजघाट
नौ, दस, ग्यारा, बारा
चलें चांदनी चौक फव्वारा।
तेरा चौदा, पन्द्रा, सोला
कनाट प्लेस में मुर्गा बोला।

—सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

8. आओ एक बनाएं चक्कर
फिर उस चक्कर में इक चक्कर
फिर उस चक्कर में इक चक्कर
फिर उस चक्कर में इक चक्कर
और बनाते जाएं जब तक
ऊब न जाएं थक कर

फिर सबसे छोटे चक्कर में
म्याऊं एक बिठाएं
और बाहरी हर चक्कर में
चूहों को दौड़ाएं।
दौड़—दौड़ कर सभी थकें
हम बैंठे मारे मक्कर,
नींद लगे हम सो जाएं
वे दखें उझक—उझक कर।

आओ एक बनाएं चक्कर

—सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

9. कितनी बड़ी दीखती होंगी मक्खी को चीजें छोटी
सागर—सा प्याला भर जल, पर्वत—सी एक कौर रोटी।

खिला फूल गुलदस्ते जैसा कांटा भारी भाला—सा
तालों का सूराख उसे होगा बैरगिया नाला—सा

हरे भरे मैदान की तरह होगा एक पीपल का पात
पेड़ों के समूह—सा होगा बचा खुचा थाली का भात।
ओस बूंद दरपन—सी होगी सरसों होगी बेल समान
सांस मनुज की आंधी—सी करती होगी उसको हैरान

—ठाकुर श्रीनाथ सिंह

10. गोलू के मामा, आए
सब देख रहे मुंह बाए

मुंह उनका है गुब्बारा

था किसने उन्हें पुकारा,
नारंगी उनको भाए
गोलू के मामा आए।
वे पूरब से हैं आते
गोलू से गप्प लड़ाते

हौले से उसे सुला कर
फिर पच्छिम को उड़ जाते।
सच बात अगर मैं बोलूं
तो पोल पुरानी खोलूं
सूरज का फटा पजामा
सिलते गोलू के मामा।

पर जाने क्या जादू है
रहते हैं सब पर छाए,
सब देख रहे मुंह बाए
गोलू के मामा आए

ये बड़े दिनों में आए
झोले में हैं कुछ लाए
हमको तो पता चले तब
जब गोलू हमें खिलाए।

लो दिखा–दिखा नारंगी
बन जाते एक बताशा,
यूं सबको देते झांसा
करते ये खूब तमाशा।

हर पंद्रह दिन में कैसे
आ जाते बिना बुलाए
मैं देख रहा मुंह बाए
गोलू के मामा आए।

–रमेश चन्द्र शाह

यहां दी गई सभी कविताएं और इनकी तरह की कई और कविताएं नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'महके सारी गली गली' में संकलित है।

किताबें बनाना

कक्षा में (स्कूल में ही नहीं) किताबें रखना अच्छी बात है पर किताबें 'बनाना' भी जरूरी है। बच्चों को पढ़ना सिखाने के लिए सबसे अच्छी सामग्री अध्यापक ही बना सकता है। यह सामग्री हर बच्चे के लिए अलग से भी बनाई जा सकती है और सामूहिक रूप से भी। इस सामग्री का मुख्य स्रोत

वे तमाम गतिविधियां हैं जिनकी चर्चा हम कर चुके हैं, जैसे कहानियां सुनाना व पढ़ना, चित्रों पर चर्चा करना, कविता गाकर सुनाना आदि। कागज कैसा भी हो सकता है। यदि बच्चों के पास कापियां हैं तो उन्हें ही नीचे समझाए गए तरीके से किताबों में बदला जा सकता है। यदि अध्यापक या स्कूल कागज खरीदने की स्थिति में हो– सादा भी और ड्राइंग का भी–तो कई और चीजें संभव हैं।

शुरुआत पांच वर्ष के आसपास कभी भी हो सकती है। यह याद रखना जरूरी है कि 'कक्षा के सारे बच्चे कभी एक साथ या एक रतार से पढ़ना शुरू नहीं कर सकते।' अंतर काफी बड़ा हो सकता है। कुछ बच्चों में पांच वर्ष की आयु में ही बहुत रुचि और सामर्थ्य हो सकती है। ये बच्चे सात वर्ष की आयु तक पढ़ने के कौशल अच्छी तरह प्राप्त कर लेंगे। दूसरी ओर कुछ बच्चों को आठ वर्ष की आयु में भी दिक्कत महसूस हो सकती है। इन पृथक रतारों की चिंता ऐसे अध्यापक को नहीं सताएगी जो अपने बच्चों को निकट से जानता हो। उसे इतना भर करना होगा कि हर बच्चे की प्रगति पर विचार करे और कुछ बच्चों की विशेष कठिनाइयों का ध्यान रखे। **यह एक चुनौती भरा काम है और जहाँ बच्चों की संख्या अधिक हो, वहां तो यह असंभव है।** वहाँ केवल सीमित सफलता की उम्मीद की जा सकती है।

कहानियों, कविताओं और तस्वीरों आदि से संबंधित गतिविधियों से उपजी बातचीत से हरेक बच्चे के लिए एक शब्द या वाक्य चुन लीजिए और उसे बच्चे की कापी या एक कागज पर साफ–साफ लिख दीजिए। यह जरूरी है कि शब्द या वाक्य उस कहानी या चित्र का प्रतिनिधित्व करता हो जिसके संदर्भ में बातचीत हुई थी। तभी उसका बच्चों के लिए कोई तात्कालिक अर्थ होगा। आपने हर बच्चे के लिए जो लिखा है उसे पढ़ कर सुनाएं। फिर बच्चे से कहें कि वह आपकी लिखावट को नीचे उतारे या उसी पर लिखे।

रोज जब आप बच्चे को एक नया शब्द या वाक्य लिख कर दें तो पिछली सामग्री को जरूर दुहराएं। बच्चे से कहिए कि पिछले शब्दों या वाक्यों को पढ़कर सुनाए और जब उसे दिक्कत हो तो आप पढ़कर सुनाइए। साथ ही जब 'रोज नया वाक्य लिखने और पुराने वाक्य सुनने के लिए बच्चे के साथ बैठें तो वाक्यों को थोड़ा विस्तार देकर उन पर बातचीत करना ना भूलें।' उदाहरण के लिए यदि एक पिछला वाक्य कुत्ते के बारे में है तो इस तरह के एक–दो प्रश्न और पूछिए कि वह कहां गया था, आज सुबह वह कहां है? आखिरी बात यह है कि बच्चे के पढ़ने में छोटी छोटी गलतियां न निकालिए। यदि वाक्य है 'बारिश आई' और बच्चे ने पढ़ा, 'बारिश हुई' तो इस गलती को ठीक करने की जरूरत नहीं है क्योंकि उससे वाक्य के अर्थ का कोई नुकसान नहीं हुआ।

कक्षा की हर कापी धीरे–धीरे कहानियों या सोच–विचार की एक किताब बन जाएगीं आप जब बच्चे की लिखाई रोज देखेंगे तो पाएंगे कि अलग अलग अक्षरों में उसे एक बराबर कठिनाई नहीं होती। कुछ अक्षर या चिह्न ज्यादा अभ्यास मांगते हैं और उनका अभ्यास उसी पृष्ठ पर जितनी बार चाहे किया जा सकता है। लक्ष्य यह है कि जो भी भाषा आप सिखा रहे हैं उसकी वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर को लिखने और पहचानने में बच्चा प्रवीण हो जाए।

कुछ लोग सोचते हैं, और शायद उन्होंने आपको बताया भी हो, कि हिन्दी वर्णमाला अंग्रेजी से एकदम भिन्न है। वे कहते हैं कि हिन्दी की मात्राएं अलग से सीखना जरूरी है और शुरू में बच्चों को केवल ऐसे थोड़े–से शब्द दिए जाने चाहिए जिनमें कोई मात्रा नहीं लगती। यह दृष्टिकोण एक मान्यता पर आधारित है और यह कतई जरूरी नहीं कि हर अध्यापक इस मान्यता से सहमत हो। इस मान्यता के कारण प्रवेशिकाओं के लेखक मात्राओं से परहेज करते हुए प्रायः बड़ी अजीबोगरीब रचना कर बैठते हैं। उदाहरण के तौर पर ये दो वाक्य जिनमें अर्थ की तलाश करना व्यर्थ है, हिन्दी की प्रवेशिकाओं में बहुत लोकप्रिय रहे हैं :

थप रतन। घर थप । घर थप रतन।

मगर इधर मत रख। खबर उधर मत रख।

'इस बात का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है कि छोटे बच्चों को मात्राओं से दूर रखा जाए।' पढ़ने की सार्थक सामग्री में मात्राएं हो तो इसका बच्चों की प्रगति पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा। हां, मात्राओं को लिखने या आगे चलकर लेखन में मात्राओं के इस्तेमाल का विशेष अभ्यास कराना दूसरी बात है।

कुछ गतिविधियां

फिर से कहना जरूरी है कि ये गतिविधियां सुझाव मात्र हैं। पढ़ना सीखने की प्रक्रिया को मजेदार बनाने के लिए आप क्या क्या चीजें कर सकते हैं, इसकी ओर संकेत करने के लिए ये गतिविधियां यहां दी गई हैं। इनकी उपयोगिता बच्चों की प्रगति के भिन्न–भिन्न स्तरों के हिसाब से आपको तय करनी होगी उनमें थोड़ा–सा परिवर्तन करके उन्हें किसी भी आयु या क्षमता के अनुरूप बनाया जा सकता है।

एक

फर्श पर नक्शा

अगर आपकी कक्षा में फर्नीचर नहीं है तो अच्छा है, नहीं तो बच्चों को बरामदे, पिछवाड़े या किसी और खुली जगह में ले जाइए जहाँ वे आसानी से घूम–फिर सकें।

दौड़ने, चलने, एक पैर से कूदने, एक कदम छोड़कर कूदने, घोड़े की तरह कूदने, लंबे डग भरने, आधे कदम लेने, उल्टे चलते, और बगल चाल के लिए अलग अलग प्रतीक चुन लीजिए। ध्यान रखें कि प्रतीक बहुत सरल हों और आसानी से याद किए जा सकें। जैसे दौड़ने के लिए :

एक कदम छोड़कर कूदने के लिएः

अब जिस जगह आप यह गतिविधि कर रहे हैं उसके हर कोने के लिए प्रतीक नियत कर दीजिए। बच्चों को समझा दीजिए कि किस प्रतीक का क्या अर्थ है। पहली बार यह गतिविधि करते वक्त तीन या चार से ज्यादा प्रतीक न लीजिए, वरना बच्चे कुछ दिक्कत महसूस करेंगे।

शुरू करने के लिए कोई सा कोना चुन लीजिए। बच्चों को बताइए कि उस कोने में पहुचकर उन्हें फर्श पर बने प्रतीक के अनुसार काम करना है। प्रतीक मिट्टी में हाथ से बनाए जा सकते हैं या वहां गत्ते या पत्थर का टुकड़ा रखकर रंग से बनाए जा सकते हैं।

जब हर बच्चे को तीन–चार बार भाग लेने का मौका मिल चुका हो तब प्रतीक की जगह उस गतिविधि का नाम साफ अक्षरों में लिख दीजिए– 'दौड़ो'। इसके बाद गतिविधि पहले की तरह चालू रखिए।

धीरे धीरे प्रतीकों की संख्या बढ़ाते जाइए। कक्षा में वापस आकर बाहर की जगह का नक्शा ब्लैकबोर्ड पर बनाइए और उसमें सही जगहों पर गतिविधियों के नाम लिखिए।

दो

वर्णमाला के टुकड़े

वर्णमाला को तीन भागों में बांटिए और हर भाग के अक्षर बड़े आकार में कागज की एक लंबी पट्टी पर लिख दीजिए। तीनों भागों को दीवार पर कुछ कुछ दूर पर चिपका दीजिए– ऐसी जगह जहाँ वह सब बच्चों को साफ व आसानी से दिखाई दे। मात्राओं को एक चौथी पट्टी पर लिखिए।

अब बोर्ड पर एक शब्द लिखिंए। बच्चों से कहिए कि उस शब्द के अक्षर और मात्राएं ध्यान से देखकर उन्हें दीवार पर चिपकी पट्टियों में पहचानें।

तीन

विज्ञान की शुरुआत

रोजमर्रा की चीजों की चर्चा के लिए उनका वर्गीकरण कीजिए। उदाहरणतया 'उड़ने वाली चीजें,' 'गोल चीजें', 'चपटी चीजें', और 'तैरने वाली चीजें'।

इस तरह बनाए गए किसी एक समूह का नाम बोर्ड पर लिखिए, फिर उसे पढ़कर सुनाइए और बच्चों से कहिए कि वे उस समूह में शामिल की जा सकने वाली तीन चीजों के नाम सुझाएं। जैसे, 'उड़ने वाली चीजों', में बच्चे पतंग, हवाई जहाज और बादल सुझा सकते हैं। इन्हें बोर्ड पर साफ साफ लिखिए।

बच्चों से कहिए कि चीजों के नाम अपनी कापी पर उतारें और चीज का एक छोटा–सा चित्र भी बनाएं।

चार
शब्दों का नागिन टापू

जमीन पर एक या कई नागिन टापू के खेल जैसे चौखाने बनाइए। हरेक घर में रोजमर्रा की चीजों जैसे गिलास, चम्मच, घर, पेड़ के नाम लिख दीजिए और साथ में उस चीज का एक छोटा–सा प्रतीक बना दीजिए।

बच्चों को पांच पांच के समूह में बांटकर हर समूह में एक रैफरी नियुक्त कर दीजिए। रैफरी का काम है गप्पी फेंकना और हर बच्चे की चाल का निरीक्षण करना। खेलने वालों को हर घर में पैर रखते समय उस पर लिखी चीज का नाम पढ़कर सुनाना है और गप्पी वाले घर के ऊपर से गुजर जाना है।

यह खेल खिलाते वक्त रैफरी का काम हर बार किसी नए बच्चे को दीजिए।

पांच
जो पढ़ा वह करो

जो बच्चे सीख चुके हैं उन्हें यह भी सीखना जरूरी है कि पढ़ने का संबंध करने से है। इस गतिविधि में अध्यापक बोर्ड के पास चुपचाप खड़ा रहता है और बोलने के स्थान पर छोटे छोटे निर्देश बोर्ड पर लिखता जाता है।

हरेक बच्चे को उसकी क्रमसंख्या पता होनी चाहिए। बोर्ड पर निर्देश लिखते समय साथ में किसी बच्चे की क्रमसंख्या भी लिख दें। जैसे– 'उठकर बाहर जाओ, एक पत्थर लाओ–10'। इस निर्देश का मतलब है कि 10 नंबर के बच्चे को उठकर बाहर जाना है और एक पत्थर लाना है। अब अगला निर्देश हो सकता है–'10 नबंर पत्थर लेकर उसे अपने दाहिने घुटने पर रखो–5।'

धीरे–धीरे निर्देशों को और जटिल बनाते जाएं। जटिल निर्देश इस तरह के हो सकते हैं कि बच्चा दीवार पर टंगा पोस्टर देखकर कोई खास चीज ढूंढ़े या अस्पताल का रास्ता बताए, या स्कूल के बाहर लगे पेड़ों की संख्या गिनकर बताए, आदि।

छह
पिछला शब्द, अगला शब्द

इस गतिविधि के लिए बाल साहित्य की किताबें पर्याप्त संख्या में होना जरूरी हैं। किताबें बच्चों में इस तरह बांटिए कि हर बच्चे को कोई ऐसी किताब मिले जिसे वह आसानी से पढ़ सके। बच्चों से कहिए कि वे किताब के किसी भी पन्ने को खोलें और दाहिना पेज देखें। क्या इस पेज के अंत में पूर्णविराम आता है? यदि हां तो कोई और पन्ना खोलें।

अब पूरा दाहिना पन्ना चुपचाप पढ़ डालें। अंत तक पहुंचकर रुक जाएं ओर अगला पन्ना न पलटें।

प्रत्येक बच्चे से पूछिए कि वह अंदाज से बताए कि अगले पृष्ठ का पहला शब्द क्या होगा? जब वह अपना अनुमान बता दे तब उससे पन्ना पलटकर यह देखने के लिए कहिए कि अनुमान सही था कि नहीं? सही अनुमान पर बाकी बच्चे ताली बजाने की परंपरा डाल सकते हैं।

जब सबकी बारी आ चुके और सब बच्चे अगला पन्ना पलट चुके हों तो फिर पहले बच्चे से शुरू कीजिए। इस बार हर बच्चे को याददाश्त के आधार पर यह बताना है कि पिछले पेज का आखिरी शब्द क्या था?

सात
तीन प्रश्न

बच्चों को दो पंक्तियों में आमने–सामने बैठाएं। हर बच्चे को एक किताब देकर उसे कहीं से भी खोलने को कहिए। दाहिना पेज पूरा पढ़कर बच्चा अपने सामने बैठे बच्चे को किताब दे दे। अब इस बच्चे को वही पेज पढ़ना है। पढ़कर वह अपने सामने बैठे बच्चे से, जो पहले ही यह पेज पढ़ चुका है, तीन प्रश्न पूछे।

शुरू–शुरू में बच्चे कुछ पूछने में दिक्कत या झिझक महसूस करें तो उन्हें प्रश्नों के उदाहरण बताइए।

आठ

गड़बड़ कविता

यह बहुत जटिल गतिविधि है, इसकी तैयारी बहुत ध्यान से और काफी पहले से करनी होगी। पर एक बार तैयारी करके आप उसी सामग्री को बार बार प्रयोग में ला सकते हैं। यह भरोसा रखिए कि इस गतिविधि में अपार आनंद आता है।

चार चार पंक्तियों की कई कविताएं चुनिए। कोशिश यह कीजिए कि चारों पंक्तियों की तुक मिलती हो। जितने बच्चे हैं उतनी ही कविताएं चाहिए। अब मान लीजिए कि आप 20 बच्चों में यह गतिविधि करने वाले हैं तो 20 कविताओं की पहली पंक्ति अलग अलग कागज पर लिख लीजिए। अब हर कागज पर दूसरी पंक्ति किसी और कविता की लिखिए और इसी तरह तीसरी और चौथी पंक्ति अलग अलग कविताओं की लिखिए। अंततः आपके पास 20 कागज होंगे जिन पर अलग अलग कविताओं से ली गई चारों पंक्तियां इस तरह लिखी हुई होंगी :

1. दूध जलेबी रक्खी है।
2. तू लगता है बिल्कुल भालू
3. तब में खाना खाऊंगा
4. पानी में ही सोती मछली

बच्चे गोल घेरे में बैठेंगे। बच्चों को बताइए कि उनके कागज पर लिखी कविता की पंक्तियां गड्डमगड्ड हो गई हैं। हर बच्चे को तीन पंक्तियां ढूंढनी है जो उसके कागज पर दी गई पहली पंक्ति से मेल खाती हैं।

पहले बच्चे से कहिए कि वह अपने कागज पर लिखी दूसरी पंक्ति पढ़कर सुनाए। बाकी बच्चे ध्यान से सुनें और सोचें कि क्या यह पंक्ति उनके कागज पर दी गई पहली पंक्ति से मेल खाती है। जिस बच्चे को ऐसा लगे वह अपना हाथ खड़ा करे और पंक्ति मांगे। यदि अध्यापक को लगे कि मांग सही है तो बच्चा यह पंक्ति लिख ले और जिस बच्चे ने यह पंक्ति दी है वह अपने कागज पर यह पंक्ति काट दे। अब अगला बच्चा अपनी दूसरी पंक्ति पढ़े। इस तरह यह क्रम तब तक चलता रहे जब तक हर बच्चे को सही दूसरी पंक्ति नहीं मिल जाती। इसके बाद तीसरी पंक्ति की खोज शुरू हो।

नौ

प्रतिक्रिया

चित्र देखकर पैदा होने वाली प्रतिक्रिया के स्तर और इन स्तरों से जुड़े हुए सवाल, जिनकी चर्चा 'बात' लेख में हो चुकी है, कहानियों और कविताओं जैसी साहित्यिक सामग्री पर भी लागू होते हैं।

जब आप बच्चों को कहानियां, पत्रिकाएं या किताबें पढ़ने को दें। इन सामग्रियों के आधार पर प्रश्न भी बना लें। जब बच्चे आपकी दी हुई सामग्री पढ़ चुकें तो आप इन प्रश्नों की मदद से बच्चों की प्रतिक्रियाओं पर आधारित एक बहस आयोजित कर सकते हैं। पर हर बार कोई चीज पढ़ने के लिए देते समय ऐसा न करें। संभवतया हते में एक दिन ऐसा रखा जा सकता है जब उस हते में पढ़ी गई सामग्री पर चर्चा हो।

बच्चों की प्रतिक्रियाओं का माप–जोख न कीजिए। न ही कभी यह आभास दीजिए कि कोई प्रतिक्रिया गलत थी। हर प्रतिक्रिया अपनी जगह सही है। ऐसी प्रतिक्रिया भी सार्थक हो सकती है जो विषयवस्तु से खींचतान करती हो। प्रतिक्रिया कैसी भी हो, वह पढ़ी हुई सामग्री से सामंजस्य स्थापित करने की चेष्टा दिखाती है। एक ही चीज को बार बार पढ़कर बच्चा उस पर हर बार अलग प्रतिक्रिया देना चाहे तो इसकी पूरी छूट रहनी चाहिए।

शुरुआत के बाद

यहाँ प्रस्तुत गतिविधियों के आधार पर आप कई और नई गतिविधियां और नई सामग्री गढ़ सकते हैं। आप पाएंगे कि जिन बच्चों ने यहां दिए गए तरीकों से पढ़ना सीखा है वे हर तरह की सामग्री में दिलचस्पी लेंगे और उसे समझने की कोशिश करने के योग्य पाएंगे। यहां तक कि अखबार का एक पुराना फटा हुआ टुकड़ा भी एक पहेली की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है। उसे छोटे छोटे टुकड़ों में फाड़कर और बच्चों से यह कहकर कि इन टुकड़ों में दिए अधूरे वाक्य पढ़कर सारे टुकड़ों को जोड़ें, आप पुराने अखबार का इस्तेमाल पढ़ने के कौशल का विकास करने के लिए कर सकते हैं। इस

कौशल में होशियारी से अनुमान करना, छुपे हुए शब्द को अर्थ से जोड़ना और अपने अनुमान का परीक्षण करना शामिल है।

बच्चे के पढ़ना सीख लेने के बाद अध्यापक का काम यह है कि बच्चे को अपने इस नए कौशल का इस्तेमाल अलग–अलग किस्म के कामों को करने की प्रेरणा दे। हमारे कई प्राइमरी स्कूलों में पढ़ने के कौशल का प्रयोग विविध उद्देश्यों के लिए करने को प्रोत्साहित नहीं किया जाता। पढ़ने का रिश्ता सिर्फ पाठ्यपुस्तकों और परीक्षा से जुड़कर रह जाता है। नई जानकारी ढूंढ़ने के लिए पढ़ने, निजी रुचियों के विकास के लिए पढ़ने, और आनंद की खातिर पढ़ने की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। पढ़ना बच्चे के व्यक्तित्व के समग्र विकास का हिस्सा नहीं बन पाता। परिणामस्वरूप बच्चे पढ़ना सीखकर भी पाठक नहीं बन पाते। यह एक बड़ी विफलता है और अध्यापक चाहे तो इसका निवारण कर सकता है।

यह लेख कृष्ण कुमार की पुस्तक 'बच्चे की भाषा और अध्यापक : एक निर्देशिका' से संकलित है।